



Om

04 Nov 2025

01:26 AM

Delhi

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121603401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 3-04/11/2025
दिन _____: सोम-मंगलवार
जन्म समय _____: 01:26:00 घंटे
इष्ट _____: 47:07:45 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 01:04:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:58:10 घंटे
सूर्योदय _____: 06:34:53 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:34:22 घंटे
दिनमान _____: 10:59:29 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 17:26:08 तुला
लग्न के अंश _____: 09:05:24 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दो-दौलत
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	कार्तिक	13
पंजाबी	संवत : 2082	कार्तिक	19
बंगाली	सन् : 1432	कार्तिक	18
तमिल	संवत : 2082	आइपसी	19
केरल	कोल्लम : 1201	तुलम	18
नेपाली	संवत : 2082	कार्तिक	19
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2082	कार्तिक	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 26:06:08
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:05:36 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : हर्षण
योग समाप्ति काल _____ : 19:39:14 घंटे
जन्म योग _____ : वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 15:40:59 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 25:51:03
भभोग _____ : 53:42:09
भोग्य दशा काल _____ : बुध 8 वर्ष 10 मा 11 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

Pt. Rahul Sharma

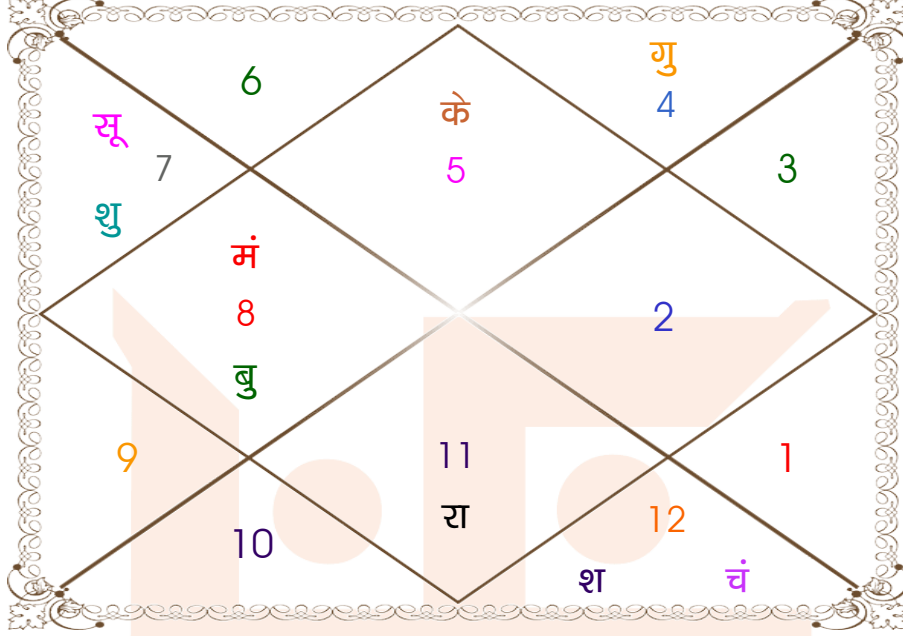
Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

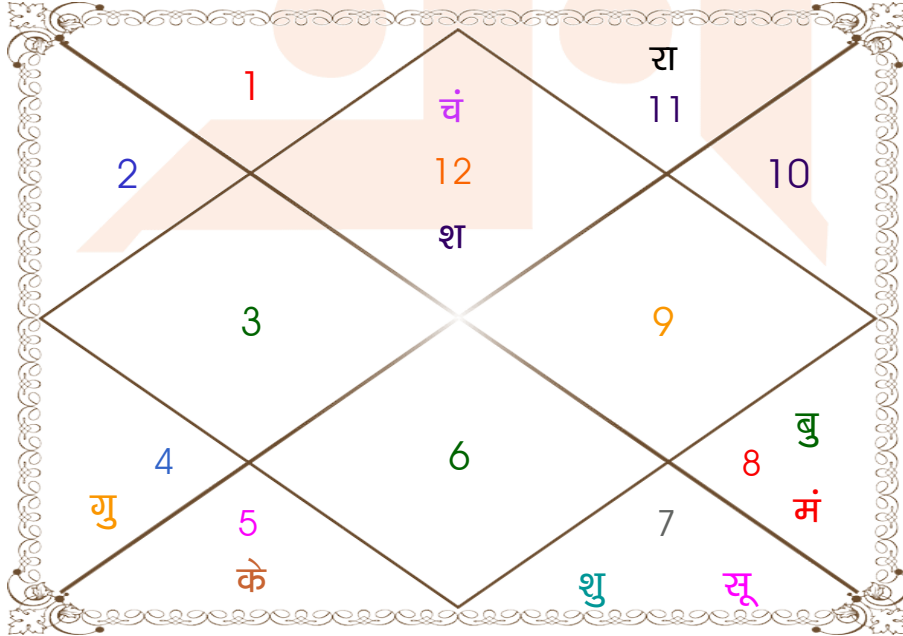
rs96531@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श चं			
रा			गु
			के ल
	बु मं	शु सू	

लग्न कुंडली

		श चं
		रा
गु		
ल के	सू शु	मं बु

विंशोत्तरी
बुध 8वर्ष 10मा 11दि
बुध

04/11/2025

16/09/2137

बुध	15/09/2034
केतु	15/09/2041
शुक्र	15/09/2061
सूर्य	15/09/2067
चन्द्र	15/09/2077
मंगल	15/09/2084
राहु	16/09/2102
गुरु	16/09/2118
शनि	16/09/2137

योगिनी

उल्का 3वर्ष 1मा 16दि

उल्का

04/11/2025

20/12/2028

	00/00/0000
	04/11/2025
संकटा	21/06/2026
मंगला	21/08/2026
पिंगला	21/12/2026
धान्या	21/06/2027
भ्रामरी	20/02/2028
भद्रिका	20/12/2028

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

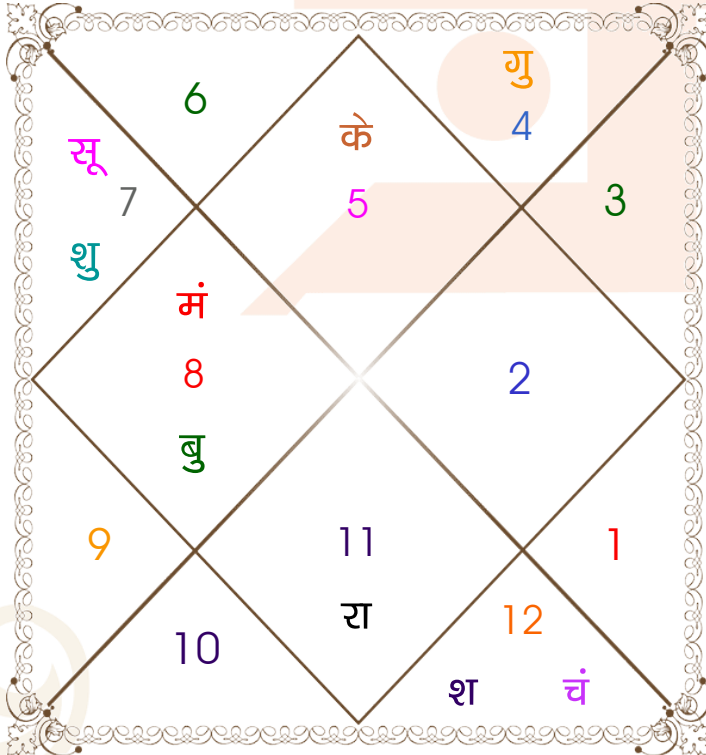
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	09:05:24	313:14:33	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	---
सूर्य			तुला	17:26:08	01:00:05	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			मीन	23:02:53	14:53:40	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	सम राशि
मंगल	अ		वृश्चि	05:16:18	00:42:56	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	स्वराशि
बुध			वृश्चि	10:25:35	00:40:46	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	सम राशि
गुरु			कर्क	00:49:54	00:01:33	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	उच्च राशि
शुक्र			तुला	01:53:06	01:15:03	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
शनि	व		मीन	01:27:17	00:02:28	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	22:45:25	00:04:44	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	22:45:25	00:04:44	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	05:57:00	00:02:20	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	05:31:05	00:01:08	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	07:15:03	00:00:36	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			वृष	07:26:04	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	केतु	--

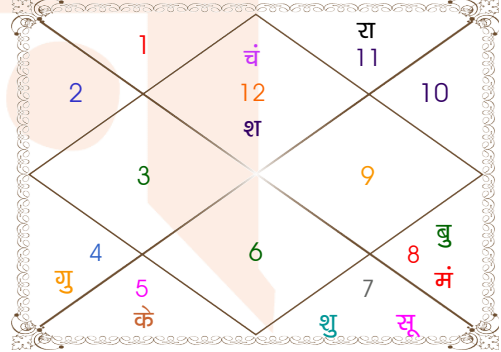
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:08

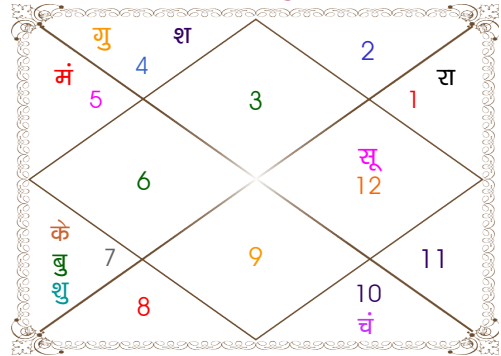
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 23:48:51	सिंह 09:05:24
2	सिंह 23:48:51	कन्या 08:32:17
3	कन्या 23:15:44	तुला 07:59:10
4	तुला 22:42:37	वृश्चिक 07:26:04
5	वृश्चिक 22:42:37	धनु 07:59:10
6	धनु 23:15:44	मकर 08:32:17
7	मकर 23:48:51	कुम्भ 09:05:24
8	कुम्भ 23:48:51	मीन 08:32:17
9	मीन 23:15:44	मेष 07:59:10
10	मेष 22:42:37	वृष 07:26:04
11	वृष 22:42:37	मिथुन 07:59:10
12	मिथुन 23:15:44	कर्क 08:32:17

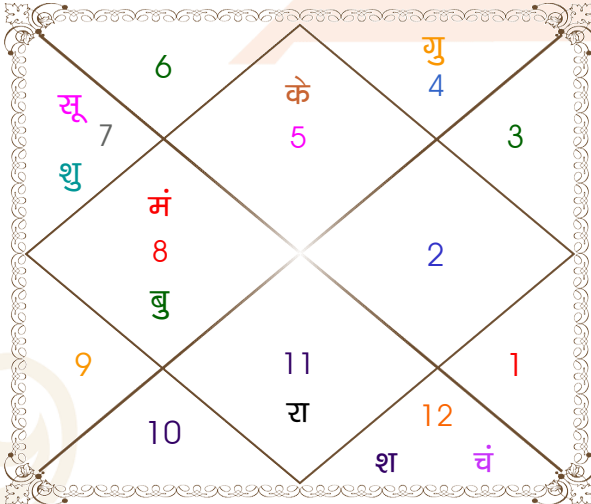
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	09:05:24
2	कन्या	05:21:06
3	तुला	05:18:10
4	वृश्चिक	07:26:04
5	धनु	09:32:34
6	मकर	10:16:28
7	कुम्भ	09:05:24
8	मीन	05:21:06
9	मेष	05:18:10
10	वृष	07:26:04
11	मिथुन	09:32:34
12	कर्क	10:16:28

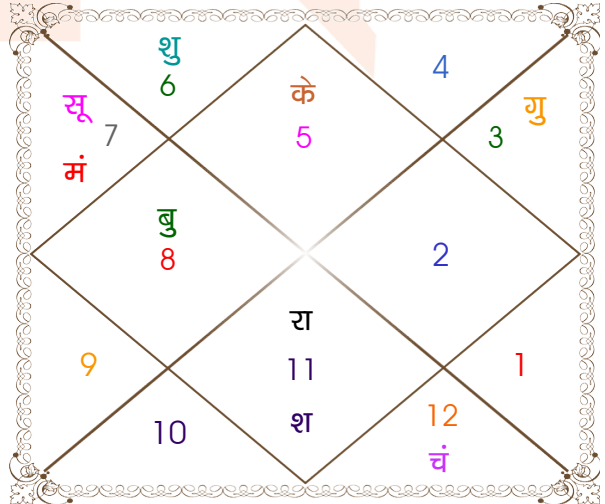
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

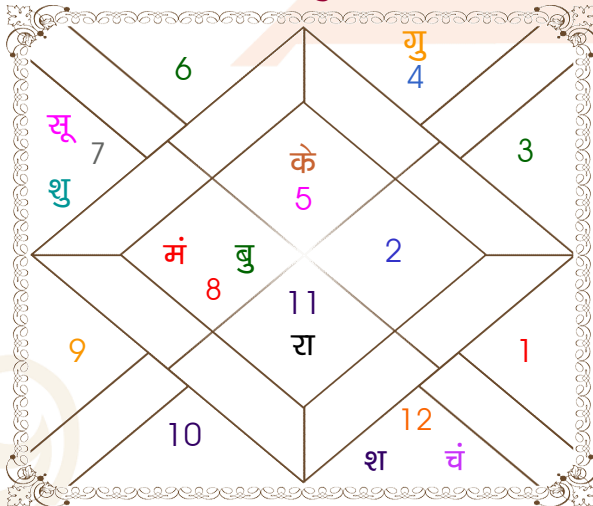
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	अमात्य	पितृ	युवा	भीत	शयन	0.17	23 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	कुमार	निपीदित	शयन	3.50	30 %
मंगल	मातृ	भातृ	मृत	विकल	शयन	0.00	19 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	वृद्ध	शक्त	नेत्रपाणि	1.73	68 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	दीप्त	आगमन	20.51	51 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	बाल	स्वस्थ	सभा	0.43	53 %
शनि	ज्ञाति	आयु	मृत	निपीदित	उपवेशन	0.67	27 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	प्रकाश	0.00	7 %
कुल						27.02	

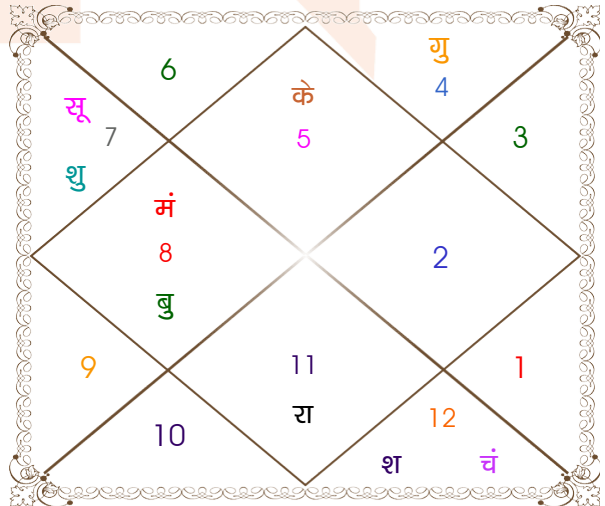
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 10 मास 11 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
04/11/2025	15/09/2034	15/09/2041	15/09/2061	15/09/2067
15/09/2034	15/09/2041	15/09/2061	15/09/2067	15/09/2077
00/00/0000	केतु 11/02/2035	शुक्र 14/01/2045	सूर्य 02/01/2062	चंद्र 16/07/2068
00/00/0000	शुक्र 12/04/2036	सूर्य 15/01/2046	चंद्र 04/07/2062	मंगल 14/02/2069
00/00/0000	सूर्य 18/08/2036	चंद्र 15/09/2047	मंगल 09/11/2062	राहु 16/08/2070
04/11/2025	चंद्र 19/03/2037	मंगल 14/11/2048	राहु 04/10/2063	गुरु 16/12/2071
चंद्र 16/03/2026	मंगल 15/08/2037	राहु 15/11/2051	गुरु 22/07/2064	शनि 16/07/2073
मंगल 14/03/2027	राहु 03/09/2038	गुरु 16/07/2054	शनि 04/07/2065	बुध 15/12/2074
राहु 30/09/2029	गुरु 10/08/2039	शनि 15/09/2057	बुध 10/05/2066	केतु 16/07/2075
गुरु 06/01/2032	शनि 18/09/2040	बुध 16/07/2060	केतु 15/09/2066	शुक्र 16/03/2077
शनि 15/09/2034	बुध 15/09/2041	केतु 15/09/2061	शुक्र 15/09/2067	सूर्य 15/09/2077

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
15/09/2077	15/09/2084	16/09/2102	16/09/2118	16/09/2137
15/09/2084	16/09/2102	16/09/2118	16/09/2137	00/00/0000
मंगल 11/02/2078	राहु 29/05/2087	गुरु 03/11/2104	शनि 19/09/2121	बुध 12/02/2140
राहु 01/03/2079	गुरु 21/10/2089	शनि 18/05/2107	बुध 29/05/2124	केतु 09/02/2141
गुरु 05/02/2080	शनि 27/08/2092	बुध 22/08/2109	केतु 08/07/2125	शुक्र 11/12/2143
शनि 16/03/2081	बुध 17/03/2095	केतु 29/07/2110	शुक्र 06/09/2128	सूर्य 16/10/2144
बुध 13/03/2082	केतु 03/04/2096	शुक्र 29/03/2113	सूर्य 19/08/2129	चंद्र 05/11/2145
केतु 10/08/2082	शुक्र 04/04/2099	सूर्य 16/01/2114	चंद्र 21/03/2131	00/00/0000
शुक्र 10/10/2083	सूर्य 27/02/2100	चंद्र 18/05/2115	मंगल 29/04/2132	00/00/0000
सूर्य 14/02/2084	चंद्र 29/08/2101	मंगल 22/04/2116	राहु 06/03/2135	00/00/0000
चंद्र 15/09/2084	मंगल 16/09/2102	राहु 16/09/2118	गुरु 16/09/2137	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 8 वर्ष 9 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि
04/11/2025	16/03/2026	14/03/2027	30/09/2029	06/01/2032
16/03/2026	14/03/2027	30/09/2029	06/01/2032	15/09/2034
00/00/0000	मंगल 07/04/2026	राहु 31/07/2027	गुरु 18/01/2030	शनि 10/06/2032
00/00/0000	राहु 31/05/2026	गुरु 03/12/2027	शनि 29/05/2030	बुध 27/10/2032
00/00/0000	गुरु 18/07/2026	शनि 28/04/2028	बुध 24/09/2030	केतु 23/12/2032
00/00/0000	शनि 14/09/2026	बुध 07/09/2028	केतु 11/11/2030	शुक्र 05/06/2033
00/00/0000	बुध 04/11/2026	केतु 31/10/2028	शुक्र 29/03/2031	सूर्य 24/07/2033
04/11/2025	केतु 25/11/2026	शुक्र 05/04/2029	सूर्य 09/05/2031	चंद्र 14/10/2033
केतु 24/11/2025	शुक्र 24/01/2027	सूर्य 21/05/2029	चंद्र 17/07/2031	मंगल 11/12/2033
शुक्र 19/02/2026	सूर्य 11/02/2027	चंद्र 07/08/2029	मंगल 04/09/2031	राहु 07/05/2034
सूर्य 16/03/2026	चंद्र 14/03/2027	मंगल 30/09/2029	राहु 06/01/2032	गुरु 15/09/2034

केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल
15/09/2034	11/02/2035	12/04/2036	18/08/2036	19/03/2037
11/02/2035	12/04/2036	18/08/2036	19/03/2037	15/08/2037
केतु 24/09/2034	शुक्र 23/04/2035	सूर्य 19/04/2036	चंद्र 05/09/2036	मंगल 28/03/2037
शुक्र 19/10/2034	सूर्य 15/05/2035	चंद्र 29/04/2036	मंगल 17/09/2036	राहु 19/04/2037
सूर्य 26/10/2034	चंद्र 19/06/2035	मंगल 07/05/2036	राहु 19/10/2036	गुरु 09/05/2037
चंद्र 08/11/2034	मंगल 14/07/2035	राहु 26/05/2036	गुरु 17/11/2036	शनि 02/06/2037
मंगल 16/11/2034	राहु 16/09/2035	गुरु 12/06/2036	शनि 20/12/2036	बुध 23/06/2037
राहु 09/12/2034	गुरु 12/11/2035	शनि 02/07/2036	बुध 20/01/2037	केतु 02/07/2037
गुरु 28/12/2034	शनि 18/01/2036	बुध 20/07/2036	केतु 01/02/2037	शुक्र 26/07/2037
शनि 21/01/2035	बुध 18/03/2036	केतु 28/07/2036	शुक्र 09/03/2037	सूर्य 03/08/2037
बुध 11/02/2035	केतु 12/04/2036	शुक्र 18/08/2036	सूर्य 19/03/2037	चंद्र 15/08/2037

केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र
15/08/2037	03/09/2038	10/08/2039	18/09/2040	15/09/2041
03/09/2038	10/08/2039	18/09/2040	15/09/2041	14/01/2045
राहु 12/10/2037	गुरु 18/10/2038	शनि 13/10/2039	बुध 08/11/2040	शुक्र 06/04/2042
गुरु 02/12/2037	शनि 11/12/2038	बुध 09/12/2039	केतु 29/11/2040	सूर्य 06/06/2042
शनि 01/02/2038	बुध 29/01/2039	केतु 02/01/2040	शुक्र 28/01/2041	चंद्र 15/09/2042
बुध 27/03/2038	केतु 17/02/2039	शुक्र 09/03/2040	सूर्य 16/02/2041	मंगल 25/11/2042
केतु 18/04/2038	शुक्र 15/04/2039	सूर्य 30/03/2040	चंद्र 18/03/2041	राहु 27/05/2043
शुक्र 21/06/2038	सूर्य 02/05/2039	चंद्र 02/05/2040	मंगल 08/04/2041	गुरु 05/11/2043
सूर्य 11/07/2038	चंद्र 31/05/2039	मंगल 26/05/2040	राहु 01/06/2041	शनि 16/05/2044
चंद्र 12/08/2038	मंगल 20/06/2039	राहु 26/07/2040	गुरु 19/07/2041	बुध 04/11/2044
मंगल 03/09/2038	राहु 10/08/2039	गुरु 18/09/2040	शनि 15/09/2041	केतु 14/01/2045

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य 14/01/2045 15/01/2046	शुक्र - चंद्र 15/01/2046 15/09/2047	शुक्र - मंगल 15/09/2047 14/11/2048	शुक्र - राहु 14/11/2048 15/11/2051	शुक्र - गुरु 15/11/2051 16/07/2054
सूर्य 02/02/2045 चंद्र 04/03/2045 मंगल 25/03/2045 राहु 19/05/2045 गुरु 07/07/2045 शनि 03/09/2045 बुध 24/10/2045 केतु 15/11/2045 शुक्र 15/01/2046	चंद्र 06/03/2046 मंगल 11/04/2046 राहु 11/07/2046 गुरु 30/09/2046 शनि 05/01/2047 बुध 01/04/2047 केतु 06/05/2047 शुक्र 16/08/2047 सूर्य 15/09/2047	मंगल 10/10/2047 राहु 13/12/2047 गुरु 08/02/2048 शनि 15/04/2048 बुध 15/06/2048 केतु 10/07/2048 शुक्र 19/09/2048 सूर्य 10/10/2048 चंद्र 14/11/2048	राहु 28/04/2049 गुरु 21/09/2049 शनि 13/03/2050 बुध 16/08/2050 केतु 19/10/2050 शुक्र 19/04/2051 सूर्य 13/06/2051 चंद्र 12/09/2051 मंगल 15/11/2051	गुरु 24/03/2052 शनि 25/08/2052 बुध 10/01/2053 केतु 08/03/2053 शुक्र 17/08/2053 सूर्य 05/10/2053 चंद्र 25/12/2053 मंगल 20/02/2054 राहु 16/07/2054
शुक्र - शनि 16/07/2054 15/09/2057	शुक्र - बुध 15/09/2057 16/07/2060	शुक्र - केतु 16/07/2060 15/09/2061	सूर्य - सूर्य 15/09/2061 02/01/2062	सूर्य - चंद्र 02/01/2062 04/07/2062
शनि 15/01/2055 बुध 28/06/2055 केतु 04/09/2055 शुक्र 14/03/2056 सूर्य 11/05/2056 चंद्र 16/08/2056 मंगल 22/10/2056 राहु 14/04/2057 गुरु 15/09/2057	बुध 08/02/2058 केतु 10/04/2058 शुक्र 29/09/2058 सूर्य 20/11/2058 चंद्र 14/02/2059 मंगल 16/04/2059 राहु 18/09/2059 गुरु 03/02/2060 शनि 16/07/2060	केतु 10/08/2060 शुक्र 20/10/2060 सूर्य 10/11/2060 चंद्र 15/12/2060 मंगल 09/01/2061 राहु 14/03/2061 गुरु 10/05/2061 शनि 16/07/2061 बुध 15/09/2061	सूर्य 20/09/2061 चंद्र 29/09/2061 मंगल 06/10/2061 राहु 22/10/2061 गुरु 06/11/2061 शनि 23/11/2061 बुध 09/12/2061 केतु 15/12/2061 शुक्र 02/01/2062	चंद्र 18/01/2062 मंगल 28/01/2062 राहु 25/02/2062 गुरु 21/03/2062 शनि 19/04/2062 बुध 15/05/2062 केतु 25/05/2062 शुक्र 25/06/2062 सूर्य 04/07/2062
सूर्य - मंगल 04/07/2062 09/11/2062	सूर्य - राहु 09/11/2062 04/10/2063	सूर्य - गुरु 04/10/2063 22/07/2064	सूर्य - शनि 22/07/2064 04/07/2065	सूर्य - बुध 04/07/2065 10/05/2066
मंगल 11/07/2062 राहु 31/07/2062 गुरु 17/08/2062 शनि 06/09/2062 बुध 24/09/2062 केतु 01/10/2062 शुक्र 23/10/2062 सूर्य 29/10/2062 चंद्र 09/11/2062	राहु 28/12/2062 गुरु 10/02/2063 शनि 03/04/2063 बुध 20/05/2063 केतु 08/06/2063 शुक्र 02/08/2063 सूर्य 18/08/2063 चंद्र 14/09/2063 मंगल 04/10/2063	गुरु 12/11/2063 शनि 28/12/2063 बुध 07/02/2064 केतु 24/02/2064 शुक्र 13/04/2064 सूर्य 28/04/2064 चंद्र 22/05/2064 मंगल 08/06/2064 राहु 22/07/2064	शनि 15/09/2064 बुध 03/11/2064 केतु 23/11/2064 शुक्र 20/01/2065 सूर्य 06/02/2065 चंद्र 07/03/2065 मंगल 27/03/2065 राहु 18/05/2065 गुरु 04/07/2065	बुध 17/08/2065 केतु 04/09/2065 शुक्र 26/10/2065 सूर्य 10/11/2065 चंद्र 06/12/2065 मंगल 24/12/2065 राहु 09/02/2066 गुरु 22/03/2066 शनि 10/05/2066

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

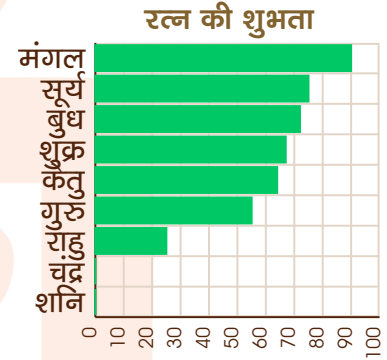
rs96531@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	90%	सुख, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	75%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	72%	सुख, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	67%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	64%	स्वास्थ्य, पराक्रम
पुखराज	गुरु	55%	कम खर्च, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	25%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, व्यय
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	15/09/2034	81%	0%	90%	84%	55%	74%	0%	25%	64%
केतु	15/09/2041	62%	0%	97%	72%	55%	74%	0%	0%	77%
शुक्र	15/09/2061	62%	0%	90%	78%	55%	80%	0%	38%	70%
सूर्य	15/09/2067	88%	0%	97%	72%	61%	55%	0%	0%	52%
चंद्र	15/09/2077	81%	0%	90%	78%	55%	67%	0%	0%	52%
मंगल	15/09/2084	81%	0%	100%	59%	61%	67%	0%	0%	70%
राहु	16/09/2102	62%	0%	78%	72%	55%	74%	0%	50%	52%
गुरु	16/09/2118	81%	0%	97%	59%	67%	55%	0%	25%	64%
शनि	16/09/2137	62%	0%	78%	78%	55%	74%	0%	38%	52%

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, हीरा, लहसुनिया एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपको भूमि-भवन सुख की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति मंगलिक योग बनाती है। मूंगा रत्न शुभ होकर संतान सुख एवं जन्म स्थान से दूर रखेगा। साहस और जोश से किये गये सभी कार्यों में आपको सफलता की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न आपकी मातृ श्रद्धा को बढ़ायेगा। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे हैं। रत्न का प्रभाव इन भावों की शुभता में वृद्धि व अशुभता को कम करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते हैं। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते हैं। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम 6 रत्ती से लेकर अधिकतम 8 रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं 3 मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण से आपके पराक्रम, प्रताप एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपकी कठोरता और अनुशासनप्रियता में कमी करेगा। आपको उदार, हितकारी बनाने में सहयोग करेगा। इसकी शुभता से आप धैर्यवान, पुरुषाधी एवं स्वाभिमानी गुणों से परिपूर्ण होंगे। माणिक्य रत्न आपकी आत्मा व चित्त की शुद्धि करेगा। भाई-बहनों का प्रियजन बनायेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते हैं। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते हैं। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यों को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न धारण करने से आप वाद विवाद में चतुर और एक अच्छे सलाहकार बनेंगे। रत्न शुभता से आपमें धैर्य और ज्ञान पर्याप्त मात्रा में बना रहेगा। आप एक अच्छे नीतिज्ञ व्यक्ति बन सकते हैं। भाई बंधुओं से आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। यह रत्न आपकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपका अन्तर्ज्ञान भी बड़ा समृद्ध होगा। आपकी रुचि गीत, संगीत या नृत्य क्षेत्र में हो सकती है। यह रत्न आपको लेखन, कार्यों में सफलता, माता-पिता का सुख, गणित विषय का ज्ञानी। आप समाज में प्रतिष्ठित और यशस्वी होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते हैं। यह रत्न आपके कुटुम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेस का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्नी का कम से कम, अन्यथा ६ रत्नी का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपके लिए शुक्र रत्न हीरा शुभदायक रहेगा। शुक्र रत्न हीरा आपको संगीत एवं कला के क्षेत्र में रुचि बना सकता है। रत्न की शुभता से आपकी श्रवण क्षमता का विकास होगा। यह हीरा रत्न धन व वैभवता देगा। हीरा रत्न आपको पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान एवं पर्यटनशील बना सकता है। रत्न की शक्तियां आपको साहसी व समर्थक बनायेगी। आप भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे। दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि के लिए भी हीरा रत्न उत्तम रहेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते हैं। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्नी और अधिकतम 8-10 रत्नी होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते हैं। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिष, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर 8 रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद पहनने पर आपको अपना व्यापार करने पर हानि की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको अपने कार्यों के अनुकूल सराहना प्राप्त नहीं हो पाएगी। यह रत्न आपको स्वभाव से क्रोधी और अहंकारी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप अपनी सफलता से असंतुष्ट हो सकते हैं। आपका स्वभाव कुछ हद तक उग्र हो सकता है। रत्न की शुभता आपके साथ न होने के कारण आपकी संगति और संबंध अयोग्य व्यक्तियों के साथ हो सकती है। दुष्ट व्यक्तियों के द्वारा आपको धन हानि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी धार्मिक आस्था में कमी कर सकता है।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

दुःख का सामना करना पड़ सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यों में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ़ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध

(04/11/2025 - 15/09/2034)

बुध की दशा में आपका मूंगा, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(15/09/2034 - 15/09/2041)

केतु की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(15/09/2041 - 15/09/2061)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(15/09/2061 - 15/09/2067)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, पुखराज, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

चन्द्र
(15/09/2067 - 15/09/2077)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(15/09/2077 - 15/09/2084)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा, पुखराज व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/09/2084 - 16/09/2102)

राहु की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, माणिक्य, पुखराज, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(16/09/2102 - 16/09/2118)

गुरु की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पुखराज, लहसुनिया, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(16/09/2118 - 16/09/2137)

शनि की दशा में आपका मूंगा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

शुभ रत्न

ढठवसकझढवदजझढरमवचंसउभपदकप01झ010धझ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढढ
वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ॐ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुड़े रहते हैं। आप मानसिक और

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता है। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता है।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पत्ति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता है, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती है। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान है, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया है। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पत्ति से सम्बंधित विवाद हो सकता है। चन्द्र के प्रभाव से संपत्ति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/02/2111-02/05/2113 22/09/2113-26/01/2114 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

अशुभ
सम
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
बदनामी
धनार्जन
पराक्रम
दम्पति

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थित कुंडली में चतुर्थ भाव में है अतः आप मंगली दोष से युक्त हैं परन्तु शास्त्रों के नियमानुसार आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाता है। अतः आपके जीवन में इस मंगली योग का शुभ प्रभाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा जिससे आप जीवन में समस्त प्रकार के सुख साधनों एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे आप पूर्ण रूपेण धनार्जन करके सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

शारीरिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपके विवाह में इस मंगल के प्रभाव से अल्प मात्रा में विलम्ब अवश्य हो सकता है। इससे कोई अशुभ परिणाम नहीं होगा फलतः विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं हर्ष के वातावरण में सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात् यदा कदा अल्प मात्रा में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी।

जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे। मकान एवं जायदाद आदि का स्वामित्व भी आप प्राप्त करेंगे। जिससे आपका सांसारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से पत्नी का स्वास्थ्य यदा कदा मध्यम रहेगा परन्तु उसका कोई विशेष अशुभ प्रभाव नहीं होगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे। चतुर्थ भाव से दशम भाव पर मंगल की दृष्टि आपके कार्य क्षेत्र को सुदृढ़ता प्रदान करेगी परिणामस्वरूप आप कोई उच्च पदाधिकारी या सम्मानित पद को प्राप्त करके समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि से आपके आय साधनों में वृद्धि होगी तथा अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा जीवन में समस्त

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे इस प्रकार आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखद बनाने के लिए आप किसी भी गौर मांगलिक या जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए। यदि कुंडली मिलान के समय आप इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखेंगे तो आप का सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुखैश्वर्य सौभाग्य तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेगा तथा आप प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की कुण्डली में भी मंगल चतुर्थ भाव में न हो क्यों कि समान भावों में स्थित मंगल जीवन में अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न करते हैं जिससे दाम्पत्य जीवन में कटुता उत्पन्न होती है। इससे आपको सुख संसाधनों की प्राप्ति तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मान सम्मान एवं उन्नति में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल यदि दोषमुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है साथ ही आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी तथा किसी भी प्रकार का तनाव उत्पन्न नहीं होगा। अतः सुखी एवं आदर्श दाम्पत्य जीवन के लिए सावधानी पूर्वक विचार करके अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढ़ाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुःखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी, स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सिंह लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया तेजस्वी पराक्रमी एवं उत्साही होते हैं तथा उनमें आत्म विश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है। अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति तथा सफलता प्राप्त करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहते हैं। धर्म के प्रति भी इनके मन में श्रद्धा रहती है तथा समयानुसार परोपकार संबंधी कार्य भी सम्पन्न करते रहते हैं। सिंह लग्न के जातक विश्वसनीय होते हैं। इसके साथ ही राजनीति या कार्य क्षेत्र में किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं फलतः समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी उनमें रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे आप एक निडर पुरुष होंगे तथा निर्भीकतापूर्वक अपने कार्यकलापों को पूर्ण करेंगे तथा इनमें आपको मनोवांछित सफलता भी प्राप्त होगी जिससे जीवन में आपको सुख संसाधन तथा धनैश्वर्य अर्जित करने में सफल होंगे।

आपके मन में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप स्वपुरुषार्थ से उन्नति करेंगे एवं प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफल होंगे। आपके शत्रु तथा प्रतिद्वन्दी भी आपसे भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे जिससे आपकी ख्याति एवं सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आपकी प्रवृत्ति अन्य जनों को अपने से तुच्छ समझने की रहेगी अतः यदि आप ऐसी भावनाओं का परित्याग कर सके तो आपकी प्रतिष्ठा में सतत वृद्धि होती रहेगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आप का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी मध्यम होगी। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे यदा कदा अनावश्यक क्रोध एवं उग्रता का प्रदर्शन करेंगे। अतः उग्रता के भाव का आपको परित्याग करना चाहिए। आपकी प्रवृत्ति अभिमानी होगी तथा यदा कदा अत्यधिक मात्रा में वार्तालाप भी करेंगे। सहनशीलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी परन्तु अपने महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगे।

जीवन में अवसरानुकूल आप धैर्य एवं गम्भीरता का भी परिचय देंगे तथा अपने इस गुण से इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे एवं सर्वत्र आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त रहेंगे। माता पिता के प्रति आपका पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। आपकी संतति अल्प होगी तथा उनसे आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा आप में परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी तथा समय समय पर तन मन धन से दूसरे की भलाई के कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में सामान्य श्रद्धा रहेगी तथा यदा कदा ही धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे परन्तु उत्कृष्ट कार्यकलापों को करने में आप रुचिशील होंगे। मित्रों के आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे सामान्य सुख एवं

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सर्व भौतिक सुख संसाधनों तथा धनैश्वर्य को अपने परिश्रम तथा पराक्रम से अर्जित करेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आमंत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्यमान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा मंगल भी स्वगृही होकर चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्चस्तर बना रहेगा।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे फलतः चल एवं अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता रहेगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति अर्जित करके अपनी समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके पास चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति की अधिकता होगी फलतः मकान या जायदाद की प्रबलता होगी। इसके अतिरिक्त जायदाद संबंधी क्रय-विक्रय से आप शीघ्र लाभ भी अर्जित करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सुन्दर आकर्षक एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। युवावस्था के बाद आप स्वयं द्वारा निर्मित घर में निवास करेंगे। आपका घर किसी अच्छी एवं समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आपके पास एक से अधिक आवास हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा इनकी संख्या एक से अधिक होगी जिसका आप प्रसन्नता पूर्वक उपयोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित, बुद्धिमान एवं आदर्शवादी महिला होगी। जिससे परिवार में वह आदरणीया मानी जायेगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव होगा तथा समयानुसार आपको अपना नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। जीवन में आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा आप भी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। इस प्रकार आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता से आप अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। प्रारंभिक कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके उत्तीर्ण होंगे। इसी परिपेक्ष्य से स्नातक परीक्षा भी आसानी से उत्तीर्ण करेंगे। तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में भी वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

यद्यपि मंगल स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में स्थित है तथापि नैसर्गिक पापी ग्रह होने के कारण युवावस्था के बाद आप न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। अतः यदि आप खान पान का विशेष ध्यान रखें तो उपरोक्त समस्याओं में कमी आएगी।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रुचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्त्व के शुभ एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रद्धाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पत्ति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रद्धाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सप्तम भाव में कुम्भ राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव व्ययशील पित प्रवृत्ति एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा राहु के प्रभाव से उसमें तेजस्विता साहस एवं पराक्रम के भाव की उत्पत्ति होती है एवं भौतिकता के प्रति आकृष्ट रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा पराक्रम एवं साहस का भाव भी विद्यमान होगा। अपने सांसारिक कार्य कलापों को वह दक्षता पूर्वक सम्पन्न करेंगी लेकिन राहु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में उपेक्षा का भाव रखेंगी। उनकी प्रवृत्ति स्वाभिमानी भी होगी एवं असहिष्णुता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद में लम्बी होंगी। उनकी शारीरिक संरचना पुष्ट रहेगी तथा सभी अंग प्रत्यंग सुडौल रहेंगे जिससे उनका आकर्षण बना रहेगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए वे समय समय पर आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। भौतिकता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा एवं पाश्चत्य संस्कृति एवं साहित्य में रुचि रहेगी इसके अतिरिक्त आधुनिक सुख साधनों एवं उपकरणों से भी घर को सुसज्जित रखेंगी।

सप्तम भावस्थ राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व प्रक्रिया में भी कुछ बाधाएं आएंगी आपका विवाह विज्ञापन द्वारा होगा तथा राहु की स्थिति से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति सदभावना बनी रहेगी लेकिन राहु के प्रभाव से पत्नी के तेजस्वी स्वभाव के कारण यदा कदा तनाव पूर्ण संबंध होंगे अतः ऐसे समय पर आपको चाहिए कि शांति एवं संयम से कार्य लेकर स्थिति को अनुकूल बनाएं।

आपका विवाह सामान्य परिवार से होगा तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी साधारण होगी। विवाह के बाद सास ससुर से संबंधों में मधुरता कम रहेगी तथा आप उनका यथोचित मान सम्मान कम ही करेंगे। अतः विशिष्ट अवसरों पर ही आप लोगों की मुलाकातें होंगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देख भाल नहीं करेंगी ननद एवं देवर भी उनके उग्र व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे तथा उनको यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी तथा परस्पर विश्वास के भाव में भी कमी रहेगी। अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि भूमितत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करते रहेंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रॉनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करते हैं तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगे। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकते हैं। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकते हैं।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृत्ति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी रहेंगे तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपको कार्य में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल में जल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न ही जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है। जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूबर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। आपको

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नहीं आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्ज इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नहीं रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती है।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने में आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्च भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरू हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(04/11/2025 - 15/09/2034)

बुध की महादशा 04/11/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 15/09/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित हैं। बुध की दृष्टि दसवें भाव पर हैं। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इसमें आपकी यात्रा, व्यय तथा लाभ हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको यश, ख्याति, सम्मान, जीवन-वृत्तिमें सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा आशावादी होंगे और आप में स्फूर्ति तथा शक्ति प्रचुर मात्रा में होगी। अत्यधिक क्रियाशीलता के कारण ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक थकावट आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। इनसे बचने के लिए सावधानी बरतें। इन सबको छोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में अच्छी आय होगी। आपको अपने माता-पिता से लाभ मिलेगा। सद्दा लाभदायक रहेगा। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। आपको नौकरी में भी लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, ज्योतिष, शिक्षण अथवा कम्प्यूटर प्रोग्रामर के कार्य का चयन कर सकते हैं। आप बौद्धिक कार्यों के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। रत्न, पुस्तक लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपोशा लोगों को इस दशा में लाभ, आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी जबकि व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता प्रतिष्ठा मिलेगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की वर्तमान दशा में आपको वाहन तथा जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपको आराम तथा जमीन-जायदाद से लाभ मिलेगा आपका एक सुन्दर मकान होगा। जमीन-जायदाद के सभी मामलों के लिए यह दशा उत्तम है। आपकी शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी और शिक्षा के क्षेत्र में यश और ख्याति मिलेगी। अभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक कार्यों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में रुचि रखते हैं। आपका दिमाग बौद्धिक और विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। उन पर आपका कुछ-व्यय होगा। उनसे आपको बहुत सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की जीवन-वृत्ति सफल होगी। उनकी उन्नति होगी तथा यश, ख्याति, उत्तम आमदनी और सम्मान मिलेगा। जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके मित्र होंगे तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता स्फूर्तिवान होंगे कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा उन्हें ननिहाल से लाभ और नौकरी में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख और जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी, आप के अनेक मित्र होंगे तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी और वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, छोटी यात्रा तथा सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा और भाग्यादेय होगा। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप, यश, ख्याति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के कारण व्यय, यात्रा और कुछ लाभ हो सकता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(04/11/2025 - 16/03/2026)**

आपकी बुध की महादशा 04/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 04/11/2025 को प्रारंभ होकर 16/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आप की अंतर्ज्ञान शक्ति प्रबल है। पराविद्या आदि में रुचि हो सकती है। आपकी माता सौभाग्यशाली रहेंगी। साझेदारों से लाभ हो सकता है। धनागम उत्तम होगा। आपकी मधुरवाणी से सब प्रभावित होंगे, लोकप्रियता और समाज में सफलता प्राप्त होंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।

आपके जीवनसाथी को सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, धनार्जन होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, कला में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मातहतों से संबंध उत्तम होंगे, मामापक्ष से लाभ होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, सफल और प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; भविष्य के लिए नींव मजबूत होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लघु यात्राएं होंगी; संचार साधनों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को धन का लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। श्वसनत्र के रोग और गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरव मंदिर में दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(16/03/2026 - 14/03/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 04/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 16/03/2026 को प्रारंभ होकर 14/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको वांछित वस्तुएं उपलब्ध होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। उत्साह और साहस में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; उच्चपद मिल सकता है। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है पर प्रयास करने पर बचाव हो सकता है। व्यापार में विस्तार और साझेदारी से लाभ संभव हैं। व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। विदेश में सफलता मिल सकती है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; उन्हें विरासत में संपत्ति मिल सकती है। माता के आत्म-विश्वास में वृद्धि हो सकती है; सफलता, सौभाग्य और उत्तम कार्यक्षमता का योग है।

आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, धन, प्रसिद्धि, उत्तम शिक्षा और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है। आपकी संतान की सफलता में बाधाएं आ सकती हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ सकते हैं मगर अध्यात्म में रुचि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी; सफलता और प्रसिद्धि मिलेंगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। छाती और हृदय के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - राहु
(14/03/2027 - 30/09/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 04/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/03/2027 को प्रारंभ होकर 30/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। लाभ में वृद्धि होगी। इच्छाशक्ति उत्तम होगी, स्वतंत्र निर्णय लेंगे। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में अचानक लाभ हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। व्यापार संबंधी यात्रा हो सकती है; विदेश भी जा सकते हैं। उच्चपद प्राप्त होगा। अन्य लोग मदद करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा। आपके पिता को निवेश और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, निवेश में लाभ, यात्रा, शिक्षा में प्रसिद्धि, भौतिक सुखों का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा के लिए समर्पित रहेगी, दृढ़प्रतिज्ञ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, कार्य में लाभ होगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, कार्यप्रणाली उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी के बजरंग बाण का पाठ करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(30/09/2029 - 06/01/2032)**

आपके लिए बुध की महादशा 04/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 30/09/2029 को प्रारंभ होकर 06/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपकी यात्राएं हो सकती हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्ययन और आध्यात्मिक प्रगति के लिए समय अनुकूल रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। साझेदार से लाभ होगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, धन का संचय, उत्तम पारिवारिक जीवन, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, यात्राएं हो सकती हैं, परिश्रम अधिक करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक कार्यों में लाभ होगा; सहकर्मी सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को मार्केटिंग अच्छी करना लाभप्रद होगा। व्यापारियों को सहकर्मियों से लाभ होगा, कार्यालय उत्तम होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आंख या कान की कोई व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com